Rizwan

Package of Practice

Particular	English	Hindi
Crop	**Capsicum**	**Capsicum**
Season/Region	Summer, Rabi, Kharif as per Truthful Label	ग्रीष्म, रबी, खरीफ (ट्रूथफुल लेबल के अनुसार)
Land preparation	Field should be well prepared free from weeds and well drainage facility. 1-2 deep ploughing, Soil should be exposed to sunlight, 3 to 4 rounds of harrows to reach fine tilt. Before final harrow, apply 8 to 10 MT well decomposed FYM/acre along with 250 gm Trichoderma for controlling soil born fungus.	खेत को खरपतवारों से मुक्त और अच्छी जल निकासी की सुविधा के साथ अच्छी तरह तैयार किया जाना चाहिए। 1-2 गहरी जुताई करें, मिट्टी को धूप में खुला रखें, 3 से 4 बार हैरो चलाएँ ताकि मिट्टी अच्छी तरह से झुक जाए। अंतिम हैरो चलाने से पहले, मिट्टी में पैदा होने वाले फफूंद को नियंत्रित करने के लिए 8 से 10 मीट्रिक टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद/एकड़ के साथ 250 ग्राम ट्राइकोडर्मा डालें।
Seed rate & Method	Seed Rate: 200 to 250 g per acre. Transplanting should be done @ 30-35 days after sowing. Plant population should be maintained at 12000 to 14000 per acre.	बीज दर: 200 से 250 ग्राम प्रति एकड़। बुवाई के 30-35 दिन बाद रोपाई करनी चाहिए। पौधों की संख्या 12000 से 14000 प्रति एकड़ रखनी चाहिए।
Spacing	Spacing: Row to Row and Plant to Plant - 150 x 45 cm.	दूरी: पंक्ति से पंक्ति और पौधे से पौधे - 150 x 45 सेमी.
Harvest	Full mature firm green fruits start harvesting at 60-65 days, later at 5 to 7 days intervals. Timely picking stimulates plants to produce more flowers.	पूर्णतः परिपक्व, दृढ़ हरे फलों की तुड़ाई 60-65 दिनों में शुरू होती है, बाद में 5 से 7 दिनों के अंतराल पर। समय पर तुड़ाई करने से पौधे अधिक फूल देने के लिए प्रेरित होते हैं।
Nutrient Management	Total N:P:K requirement @ 80:100:120 kg per acre. Dose & Timing: Basal Dose: Apply 50% N and 100% P, K as basal dose during final land preparation. Top Dressing: 25% N at 30 days after sowing and 25% N at 50 days after sowing.	कुल नाइट्रोजन: फास्फोरस: पोटेशियम की आवश्यकता 80:100:120 किग्रा प्रति एकड़। मात्रा एवं समय: आधारभूत मात्रा: अंतिम भूमि तैयारी के दौरान 50% नाइट्रोजन और 100% फास्फोरस, पोटेशियम की आधारभूत मात्रा डालें। टाप ड्रेसिंग: बुवाई के 30 दिन बाद 25% नाइट्रोजन और बुवाई के 50 दिन बाद 25% नाइट्रोजन डालें।
Pest & Disease management	For effective Disease & Pest control use the following solution: Powdery Mildew and Anthracnose - Apply Amistar (200ml/acre). Fruit rot - Apply Kavach @ 400g/acre. White Fly + Mites - Apply Pegasus @ 250g/acre. Spodetara+ Fruit Borer - Apply Cigna @ 250 ml/acre. Fruit Borer - Apply Proclaim @ 80g/acre and for any other Insects / pest apply recommended Insecticides and fungicide as per recommendation from the Department of Agriculture (plant protection).	प्रभावी रोग और कीट नियंत्रण के लिए निम्नलिखित घोल का उपयोग करें: पाउडरी फफूंदी और एन्थ्रेक्नोज - एमिस्टार (200 मिली/एकड़) का प्रयोग करें। फल सड़न - कवच 400 ग्राम/एकड़ की दर से प्रयोग करें। सफेद मक्खी + माइट्स - पेगासस 250 ग्राम/एकड़ की दर से प्रयोग करें। स्पोडेटारा + फल छेदक - सिग्ना 250 मिली/एकड़ की दर से प्रयोग करें। फल छेदक - प्रोक्लेम 80 ग्राम/एकड़ की दर से प्रयोग करें और किसी भी अन्य कीट/कीट के लिए कृषि विभाग (पौध संरक्षण) की सिफारिश के अनुसार कीटनाशक और कवकनाशी का प्रयोग करें।
Weed Control - Chemicals with doses and timing	Timely weed removal is very important, need based hand weeding can be done to ensure healthy crop.	समय पर खरपतवार निकालना बहुत महत्वपूर्ण है, स्वस्थ फसल सुनिश्चित करने के लिए आवश्यकतानुसार हाथ से निराई की जा सकती है।
Irrigation Schedule	Irrigation Frequency Depends upon - A. Soil type: Light soils need more frequency. Heavy soil needs less frequency. B. Crop Stage: Vegetative stage: maintain adequate moisture for the development of roots. Flowering & fruiting - frequent and shallow irrigation. Harvesting - gradually reduce irrigation during harvesting. C. Growing Season: Summer - requires frequent irrigation. Winter- As against the summer season, in winter the irrigation frequency is longer. Rainy - very less frequency depending upon soil moisture.	सिंचाई की आवृत्ति इस पर निर्भर करती है - क. मिट्टी का प्रकार: हल्की मिट्टी में अधिक बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। भारी मिट्टी में कम बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। ख. फसल अवस्था: वानस्पतिक अवस्था: जड़ों के विकास के लिए पर्याप्त नमी बनाए रखें। पुष्पन और फलन - बार-बार और उथली सिंचाई करें। कटाई - कटाई के दौरान सिंचाई धीरे-धीरे कम करें। ग. वृद्धि ऋतु: ग्रीष्म ऋतु - बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। शीत ऋतु - ग्रीष्म ऋतु के विपरीत, शीत ऋतु में सिंचाई की आवृत्ति अधिक होती है। वर्षा ऋतु - मिट्टी की नमी के आधार पर बहुत कम बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।